दादाजी का होटल

दादाजी का होटल

लेखक : रिकी

चित्र : डेविड

हिंदी : दीपक थानवी

गरमियां आते ही, मम्मी, मेरे भाई-बहन और मैं पहाड़ियों में स्थित होटल गये थे। यह होटल मेरे दादाजी का था।

होटल की इमारत बहुत बड़ी थी। वहाँ के कमरों के बाहर बहुत बड़े बरामदे थे और बहुत सारी झूलती कुर्सियां भी। पूरा होटल सफ़ेद रंग का था।
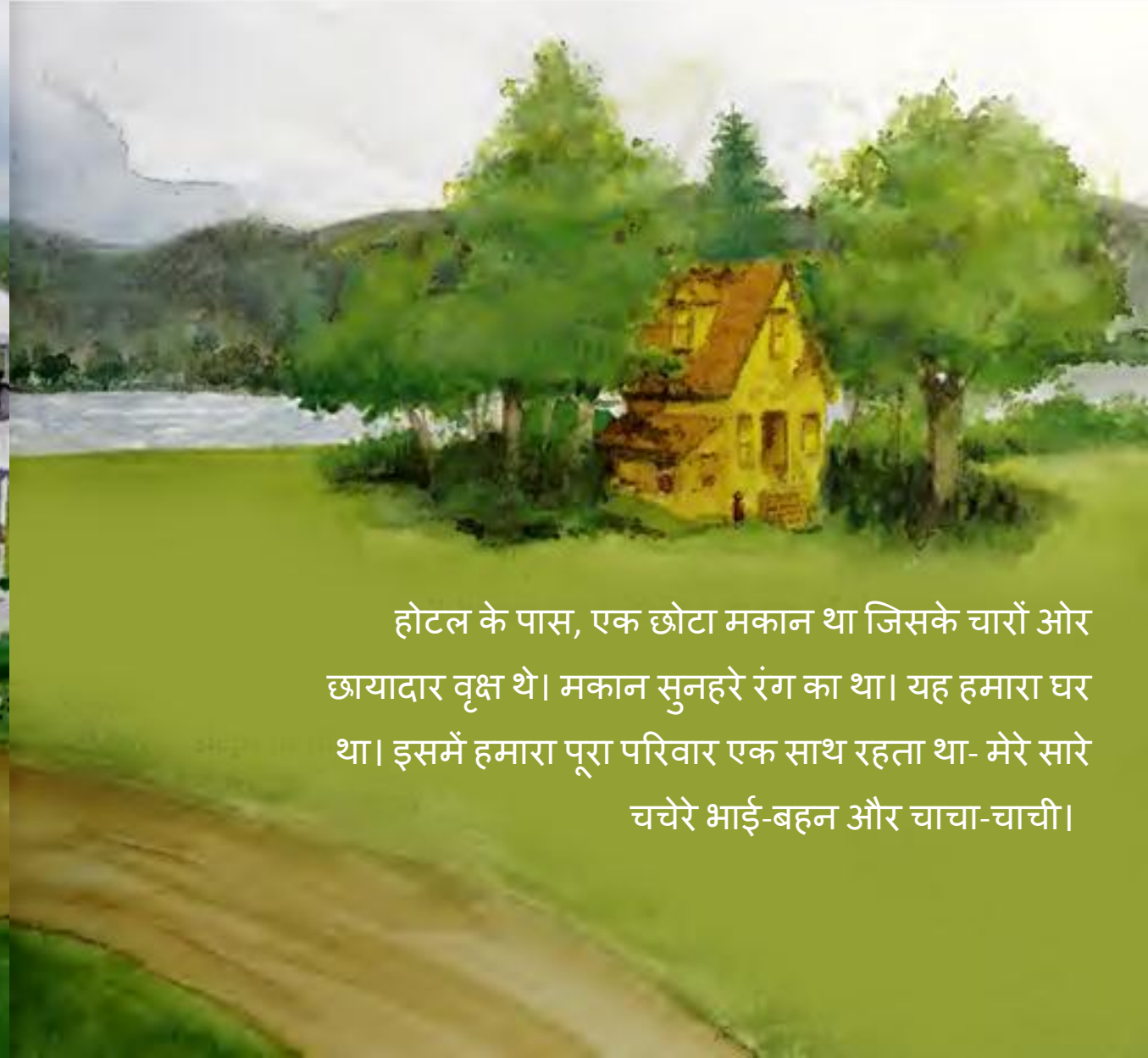
होटल के पास, एक छोटा मकान था जिसके चारों ओर छायादार वृक्ष थे। मकान सुनहरे रंग का था। यह हमारा घर था। इसमें हमारा पूरा परिवार एक साथ रहता था- मेरे सारे चचेरे भाई-बहन और चाचा-चाची।

वहाँ मेरे 13 चचेरे भाई-बहन थे। और मेरी 3 चाचियां गर्भवती थी इसलिए मेरे भाई-बहनों की संख्या बढ़ने वाली थी।

"मम्मी," मैंने पूछा, "क्या आप भी गर्भवती हैं ?"

"क्या, मैं?", मम्मी ने पूछा।

"यदि ऐसा है तो अगली गरमियों तक होटल में कुल 20 भाई-बहन हो जायेंगे, मुझे और एलबी और नेडी को जोड़कर," मैंने कहा।

"19 ठीक रहेंगे, मेरी प्यारी बेटी," मम्मी बोली।

"मुझे 20 चाहिये, मम्मी," मैंने मम्मी को गले लगाते हुवे कहा।
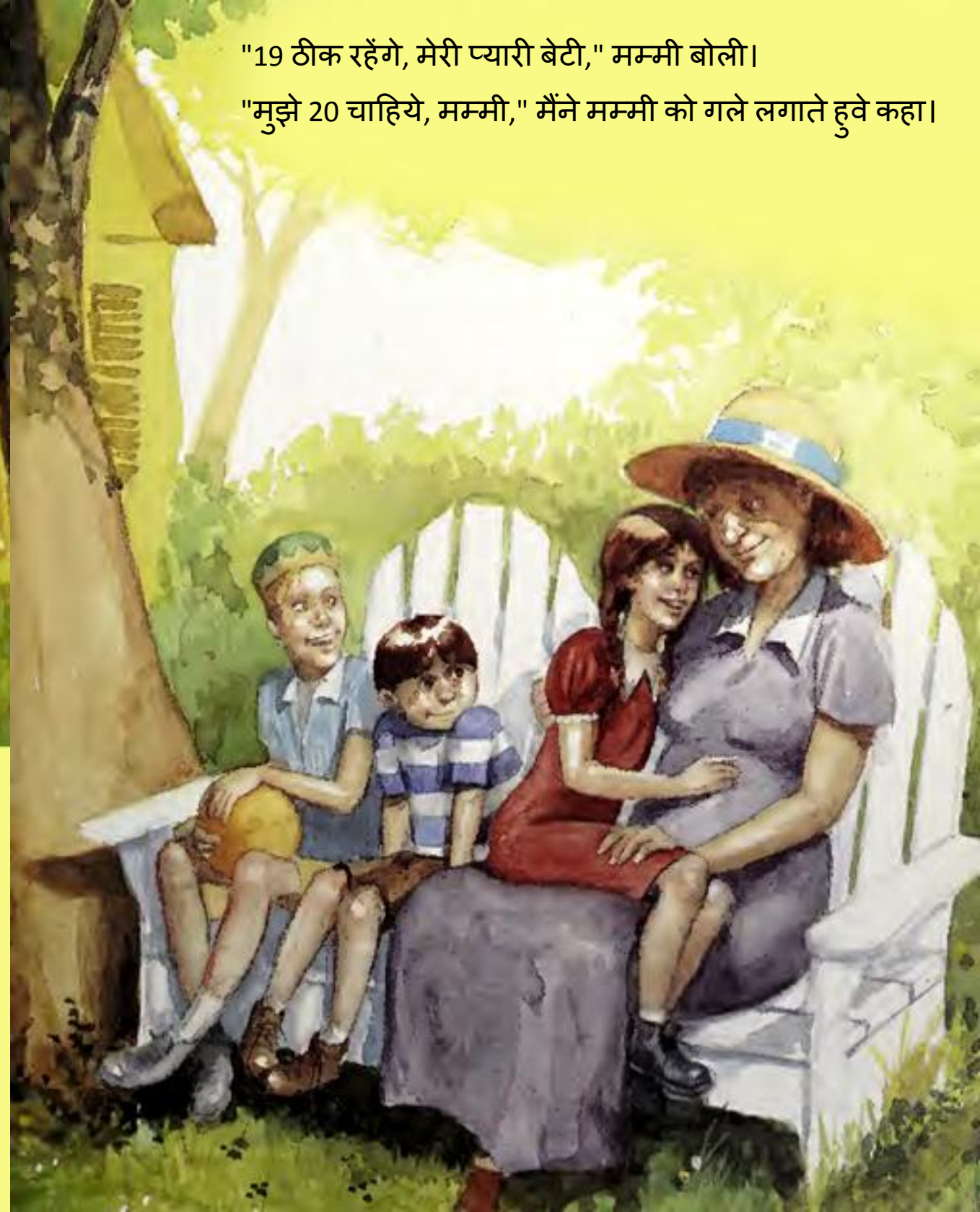
मुझे मेरे भाई-बहनों के साथ रहना अच्छा लगता था। ख़ासकर होटल में जहाँ हम सब सुबह से लेकर शाम तक साथ में रहते थे। हम रोज़ नाश्ता करने के बाद घर के बाहर वाली सीढ़ियों पर बैठ जाते थे। और फिर सब मिलकर सोचते थे कि पूरे दिन में हमें क्या-क्या करना है।

हम तरह-तरह के खेल खेलते थे। हम 'नेताजी-नेताजी' वाला खेल खेलते थे। मुझे इसमें नेताजी बनना अच्छा लगता था क्यों कि तब सभी जन मेरा कहना मानते थे। जब हम सॉफ्टबॉल या क्रॉके खेलते थे, तब नन्हें टेमी और जिग्गी हमारे खेल के बीच में पूरे मैदान पर दौड़ने लग जाते थे। लेकिन कोई बात नहीं...मैं भी कभी उनकी तरह नन्ही ही थी !

जिस दिन ज्यादा गरमी होती थी, उस दिन हम तालाब में तैरते थे। हम सब को एक दूसरे पर पानी उछालना अच्छा लगता था। सिवाय टेमी और जिग्गी के, क्यों कि वो तालाब से बाहर भाग जाते थे।

जब कभी मेहमान भोजन कक्ष में भोजन कर रहे होते थे, तब हम उनके कमरों के बाहर रखी कुर्सियों पर झूलते थे। झूलने में हमें बहुत मज़ा आता था।

वैसे तो हमारा हर दिन मौज-मस्ती से भरा होता था लेकिन रविवार हमारे लिये विशेष दिन था।

रविवार को हम जल्दी उठे और घर से बाहर भागे। पास की पहाड़ी की ओर। ओस से भरी हुई घास पर दौड़ते हुवे मैं सबसे पहले उस पहाड़ी की चोटी पर पहुँची। और ज़ोर से चिल्लायी, "मैं सबसे पहले पहुँच गयी !"

और सभी हँसते-चिल्लाते हुवे मेरी नकल करने लगे।

हम पेड़ों की छाया में छोटी चट्टानों पर उछलते-कूदते हुवे आगे बढ़ते गये।
और फिर चिल्लाते हुवे मुर्गियों के घर में घुस गये, "चलो! हटो!शू...शू..!"

हमारे शोर से मुर्गियां कुड़कुड़ाती हुई अपने घोंसलों से जैसे ही उड़ी, हम
फटाक से उनके अंडे उठाकर पुरानी बेकरी की ओर भाग गये।
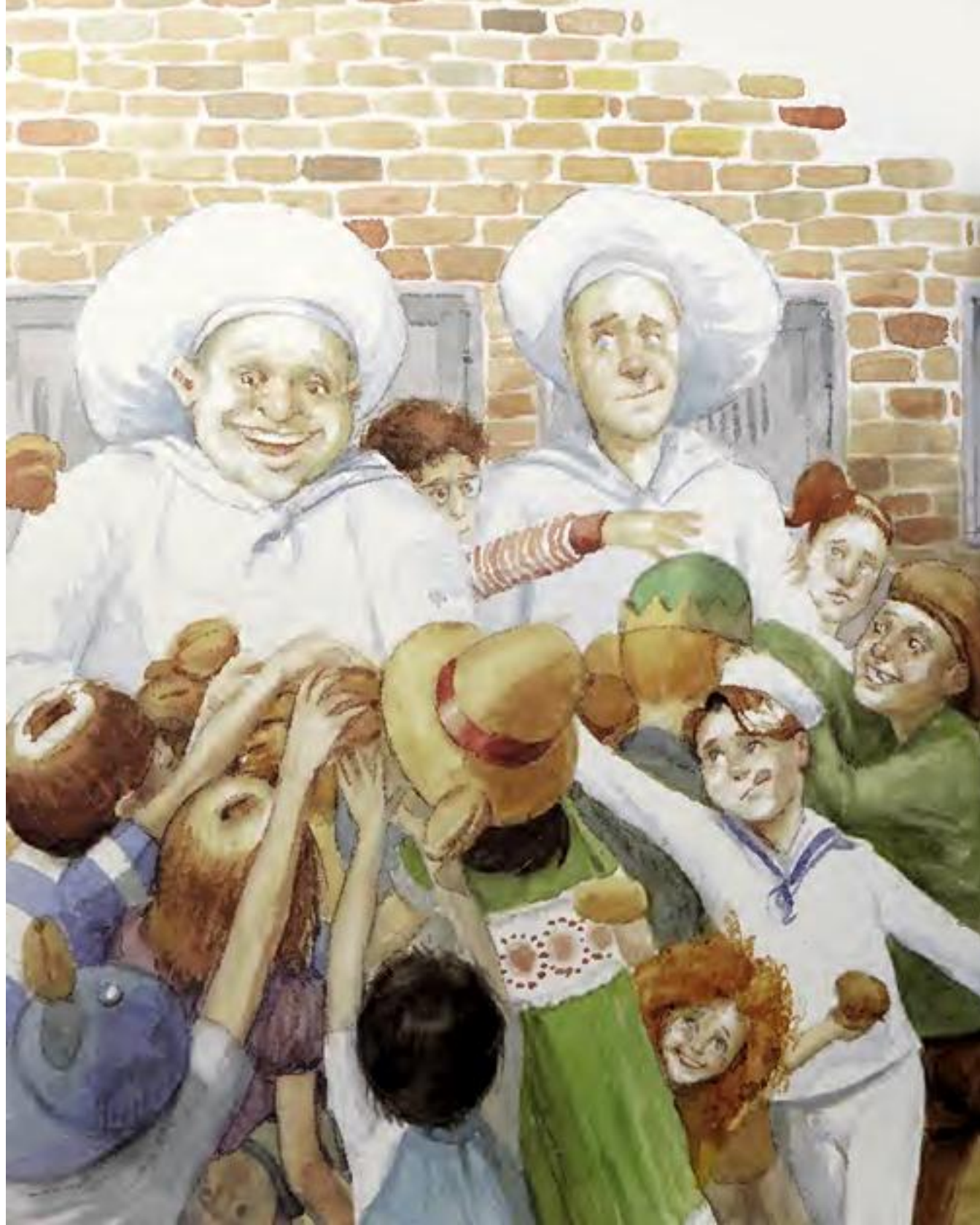
बेकरी के अंदर घुसते ही स्वादिष्ट खुशबू आयी। लाल ईंटों से बनी भट्ठी में ब्रेड बनती थी। और बेकरी में ताज़े बने हुवे मफिन और रोल बहुत सारी थालियों में भरे रहते थे। जब हमनें अपने-अपने हिस्से के मफिन और रोल थालियों से उठाये तो रसोइये ने हमें कुछ नहीं कहा। क्योंकि हम सब तो दादा के पोते-पोतियां थे।
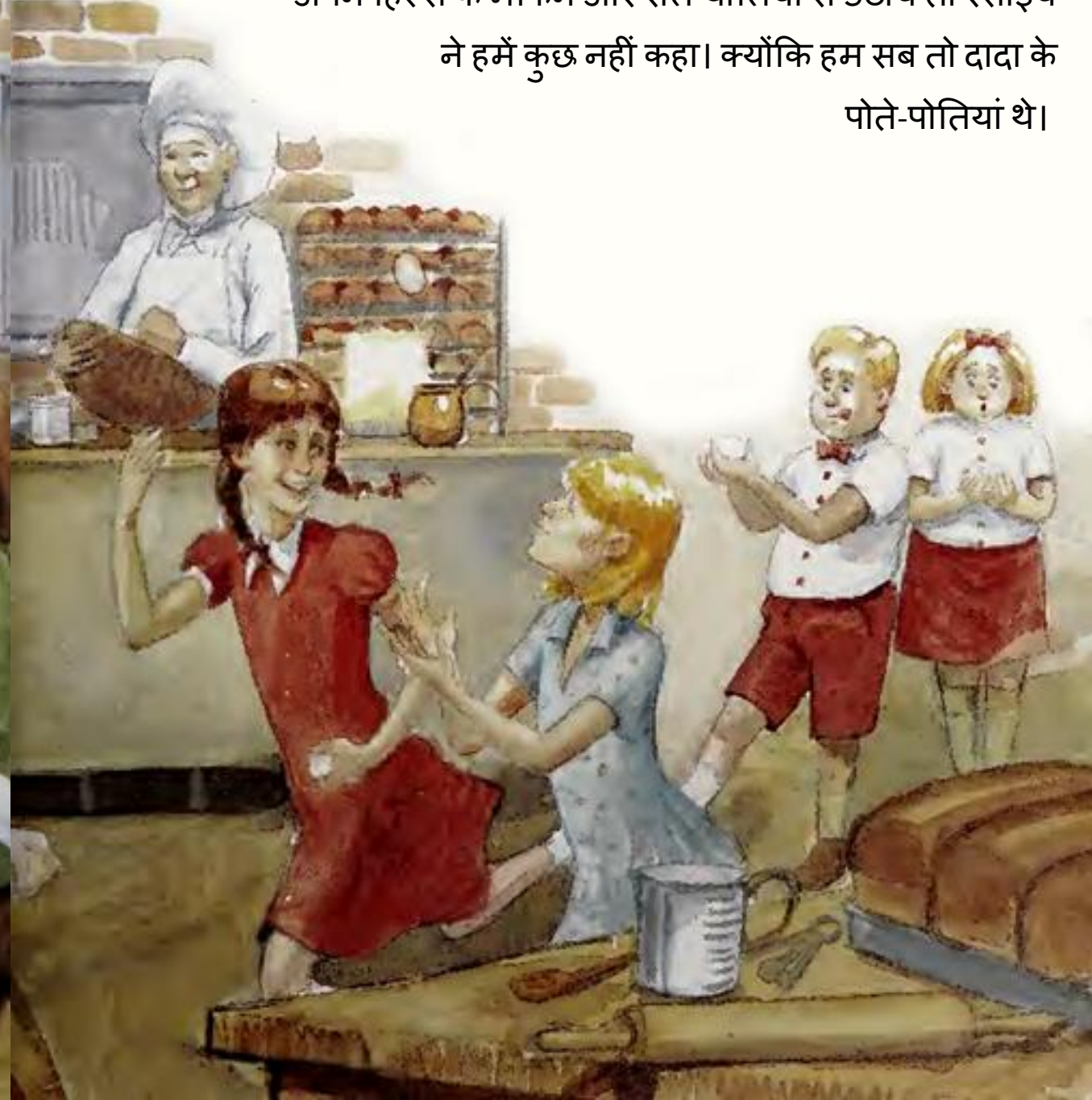
फिर हम वापिस उसी रास्ते से घर चले गये। छोटी चट्टानों पर उछल-कूद करते हुवे हम आगे बढ़े। पहाड़ी से नीचे उतरते हुवे सीधे घर की रसोई में जा घुसे।

वहाँ दादी हमारी राह देख रही थी। हमनें हमारे अंडे दादी को दे दिये। उन्होंने हमें प्यार से कहा, "मेरे प्यारे बच्चों," और फिर हम सब को गले लगा लिया।

जब दादी ने मुझे गले लगाया, तब उनसे बहुत अच्छी सुगंध आ रही थी। ऐसी ही सुगंध उन कपड़ों में थी जो बाहर सूख रहे थे और जिसे बाद में मम्मी अंदर ले आयी थी।

जब हम मेज़ पर एक साथ बैठे, तब सभी जन एक साथ बोलने लग गये। हम बहुत शोर कर रहे थे। दादी को यह सब सुनकर अच्छा लगा। वे हमारे अंडों को काले रंग के बड़े चूल्हे पर पकाती हुई ज़ोर से हँस रही थी।

जब उन्होंने नाश्ता बना लिया, तब वे मेज़ के पास आयी और हम सबको को नाश्ता दिया। हम सब यानि उनके 16 पोते-पोतियां मिलकर मेज़ पर बैठकर एक साथ नाश्ता कर रहे थे। यह सब देखकर दादी खुशी से इतनी खुलकर मुस्करायीं कि उनकी आँखें लगभग बंद ही हो गयीं थी।
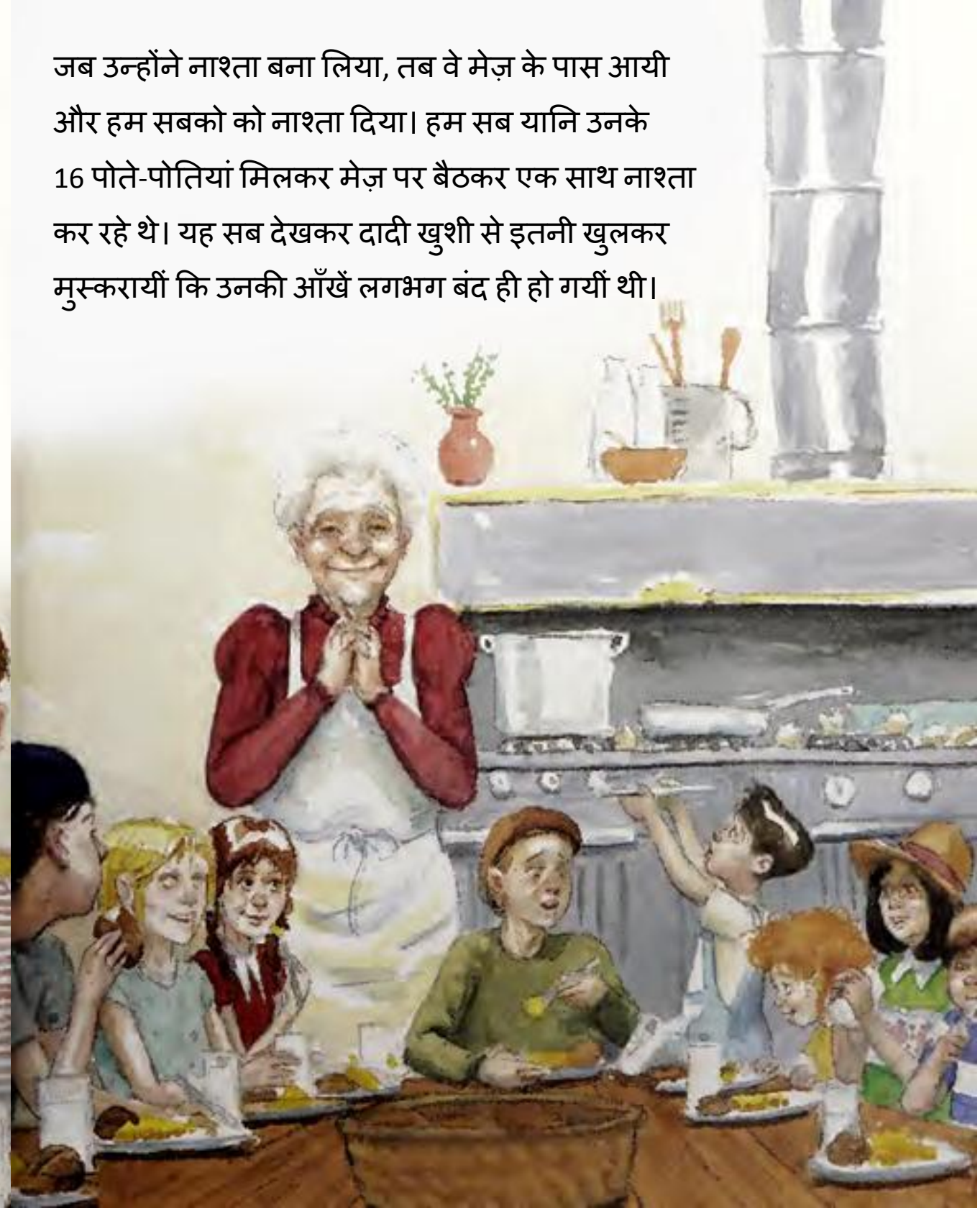
हर रविवार को जब मेहमान भोजन कर लेते थे, तब उसके बाद हम सब भोजन कक्ष में दोपहर का खाना साथ में बैठकर खाते थे। दादा मेज़ के एक कोने पर बैठते थे। दादा के पास वाली कुर्सी पर दादी बैठती थी। वे दोनों हम बच्चों को देखकर मुस्कुराते रहते थे।

दादा ने अपना हाथ ऊपर उठाकर हमें शान्त रहने को कहा। "हर्ब," उन्होंने कहा, "क्या तुम कुछ कहना चाहते हो ?"

"हाँ, पापा। यहाँ इतने बड़े परिवार के होने से हमें भला फायदा क्या होगा ?" चाचा हर्ब ने पूछा जो कि दफ़्तर का काम संभालते थे।

"इतना बड़ा परिवार एक साथ होना क्या यह यहाँ फायदे से कम की बात है ?" दादा ने मुस्कुराते हुवे पूछा। जवाब में चाचा हर्ब ने अपना सिर हिलाया।

"हमारे पास ब्रिस्केट अब थोड़ा ही बचा है, पापा... बच्चों को ये बहुत पसंद है," चाचा जेक ने कहा जो कि रसोई का प्रबंधन करते थे।

"हमारे पोते-पोतियों के अलावा हम किसी और को थोड़ी न खिलाते हैं ?" दादी ने पूछा।

जवाब में चाचा जेक ने अपना सिर हिलाया। दादा-दादी और हम बच्चे बिना आवाज़ किये हँसने लगे।

"हमें और सोडा चाहिये, पापा...बच्चे बहुत पीते हैं," चाचा मो ने कहा जो कि पेय सामग्री का प्रबंधन करते थे।

"मिठाइयां भी मंगवाओ,पापा," चाचा बैन ने कहा जो कि सभाकक्ष में एक मिठाई की दुकान संभालते थे।

"अरे," दादा ने अपनी लंबी दाढ़ी पर हाथ फेरते हुवे कहा। "बच्चों जितना और कुछ मीठा होता है भला !"

चाचा बैन और चाचा मो ने मेज़ के चारों ओर बैठे हम बच्चों को देखा और फिर हम सब एक साथ हँसने लग गये।

"शायद आपको यह होटल बेच देना चाहिये, पापा, और हम सबको घर पर ही रहना चाहिये ?" चाची बेसी ने पूछा। "घर पर रहना हमको सस्ता पड़ेगा।" "घर छोटा है। और क्या गर्मियों में हम एक साथ न रहें ?" दादी ने ज़ोर से चिल्लाते हुवे पूछा। "बेसी, तुम्हें शर्म आनी चाहिये !"

"ठीक है, ठीक है," चाचा हर्ब ने मेज़ पर हाथ पटकते हुवे कहा। "पापा, अगर आप मनोरंजन करने वालों को पैसे न दें तो ठीक रहेगा।"

"पैसे ? पैसे ? कौन देता है ?" मम्मी ने पूछा जो कैसिनो संभालती थी। मम्मी बोली, "योसेल कितनी मधुर आवाज़ में गाता है, और गोल्डबर्ग परिवार तो ऐसा नृत्य करता है जैसे फरिश्ते करते हों ! और वो हमारे रिश्तेदार भी तो हैं ! हम उन्हें ज्यादा पैसे नहीं देते हैं !"

मैं हँसी रोकने की बहुत कोशिश कर रही थी लेकिन आखिर में हँस दी।
चाचा हर्ब मुस्कुराये और बोले, "पापा, फिर हमें क्या करना चाहिये ?"
"क्या करना चाहिये ?" दादा ने हँसते हुवे पूछा। और फिर खुद ही बोले,
"हमें भोजन करना चाहिये !"
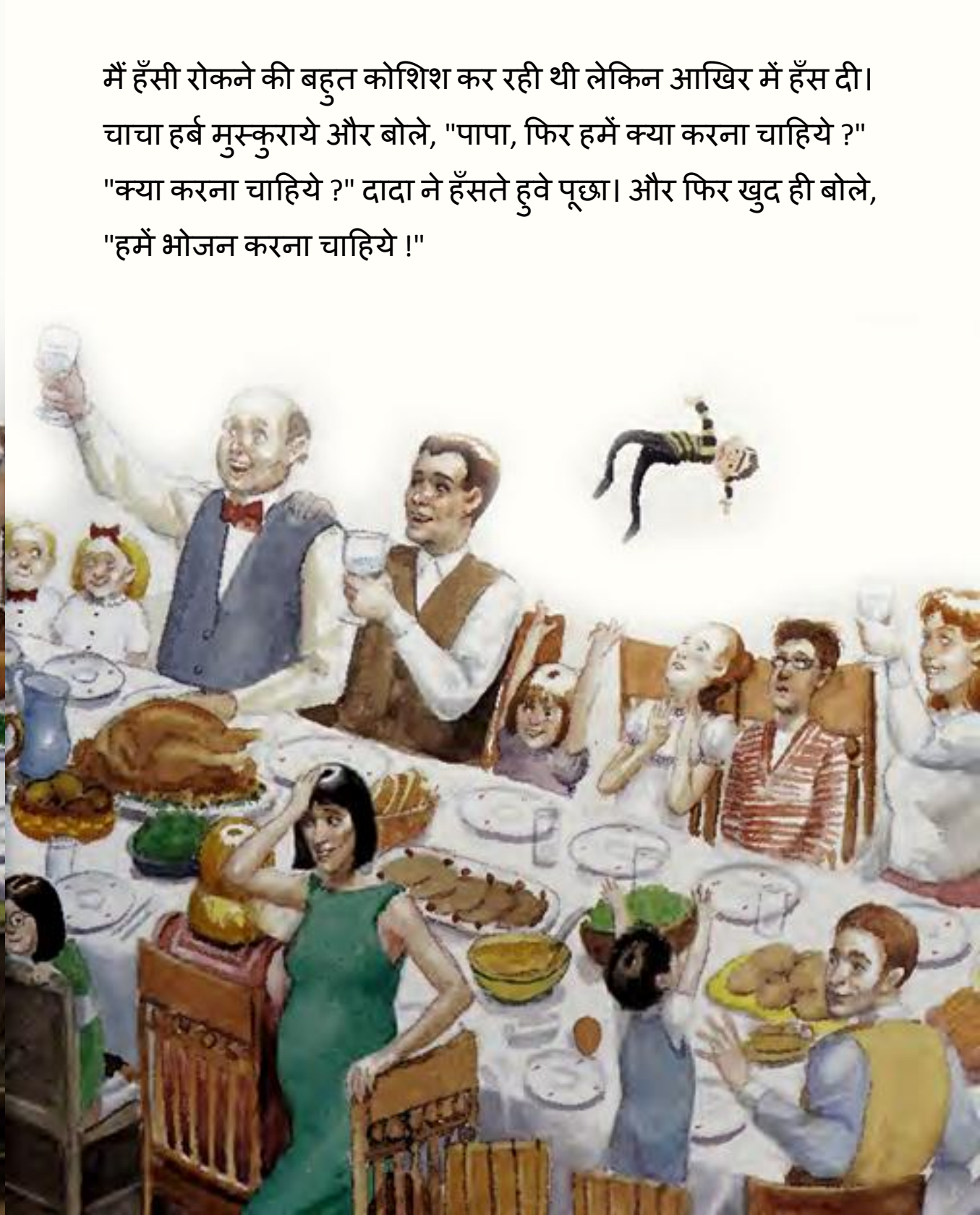
मम्मी और मैं दोनों एक दूसरे को देखकर मुस्कुराये और फिर गले मिल गये।

मैंने मेज़ के चारों ओर बैठे सब को देखा। सब एक साथ बोल रहे थे। बहुत शोर हो रहा था। लेकिन ठीक है - यह हमारी होटल थी। दादा या दादी या मम्मी या ख़ासकर मेरे लिये यह परिवार कभी इतना बड़ा भी नहीं था कि हम सब एक साथ न रह पायें !